**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 09-05-2020; Accepted: 20-05-2020; Published: 12-06-2020**
**www.socialsciencejournal.in**
**Volume 6; Issue 3; 2020; Page No. 113-115**

# जायसी: रोमानी प्रेम के सूफी शिल्पकार

**प्रभात कुमार**
पूर्व-छात्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**सारांश**
पद्मावत में शुद्ध रोमानी प्रेम है तथा विलगाव से लगाव तक की प्रेम कथा समाहित है साथ ही प्रेम के माध्यम से खुदा के नूर की कल्पना की गई है और फिर पद्मावत में एक साथ दो कथा समान्तर चलने लगती है एक लौकिकता के स्तर पर दूसरा इहलौकिकता के स्तर पर। कृत्रिमता का लेस मात्र भी पद्मावत में दिखाई नहीं देता है। प्रकृति से लगाव, प्रकृति के सहयोग से प्रेम तत्त्व के निरूपण में जायसी अपने समकालीन कवियों से काफी आगे दिखाई देते हैं। पद्मावत की सबसे सबसे बड़ी खासियत है इसका त्रासदी में बदल जाना जिसके द्वारा मन का विरेचन होता है। जबकि यह सिर्फ मन का ही विरेचन नहीं है वरन दैहिक प्रेम का सम्पूर्ण विरेचन है और अध्यात्मिक और रोमानी प्रेम का समन्वय है।

**मुख्य शब्द:** रोमानी प्रेम, तसव्वुफ़, ब्रह्म, समा, सूफ़ी, नूर, अद्वैतवाद, अविद्या माया, रहस्यवाद, फ़क़ीर, ऐतिहासिकता, दर्शन, तरीकत, शरीअत, हकीकत, मनोविज्ञान, भौतिकवाद

## प्रस्तावना

सूफियों का संबंध मूलतः इस्लाम से है। सूफियों ने इस्लाम के दार्शनिक प्रभाव के साथ-साथ अन्य दर्शन के प्रभावों को भी आत्मसात कर एक नया दर्शन 'तसव्वुफ़' को लोगों के सामने रखा। सूफीमत के अनुसार ब्रह्म सत् और सृष्टि असत् है और प्रत्येक मनुष्य में सत् और असत् दोनों अंश विद्यमान रहते है। "मनुष्य में निहित् परमात्मा का अंश अपने मूल उद्गम स्थान (परमात्मा) की ओर लौटकर उससे एकरूप होना चाहता है। इसलिए सूफी साधक को परमात्मा को प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा होती है और वो अध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते हुए अपने लक्ष्य (परमात्मा की प्राप्ति) की ओर अग्रसर होता है।"1

सूफी संतो ने अपने प्रवचनों में ईश्वर की निकटता का आभास उत्पन्न करने के लिए गीत-संगीत की पद्धति अपनायी, जिसे 'समा' कहा जाता है। सूफियों का रहस्य ईश्वर को समझना और साथ-साथ ईश्वर का नूर सृष्टि के किस उपादान में समाहित है इसे भी देखना था। जायसी द्वारा पद्मावत में इसीलिए नूर(ख़ुदा का दिव्य प्रकाश) की कल्पना की गई है। इस बाह्य जगत् में जितने भी धर्म हैं सबका लगभग एक सा फलसफ़ा है और वो है अपने ईश्वर से मिलना या उसमे समाहित होना या फिर उसका अंश हो जाना। लेकिन ईश्वर से साक्षात्कार संभव है या नहीं,यह भी एक संशय है दूसरी ओर हम यह भी कह सकते हैं कि अगर हम ईश्वर में समाहित ही हो जाएँ तो फिर उसके दर्शन कैसे करेंगे। चूँकि इस्लाम में एकेश्वरवाद का मत है और अल्लाह कोई आकार नहीं है वो निराकार है। लेकिन उसकी रहमत बरसती है चाहे वो किसी भी रूप में बरसे। बस जायसी इसी तरह खुदा के नूर का संकल्पना कर प्रेम तत्व का निरूपण कर सबसे आगे निकल जाते हैं। इस प्रकार जायसी साहित्य जगत के सबसे बड़े सूफी बन जाते हैं। इस सूफी परम्परा के अनुसार सूफियों ने हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के मध्य समन्वय कराने का प्रयास किया और इस कार्य में वे सफल भी रहे। सूफियों ने ईश्वर-प्रेम से पहले मानव-प्रेम की स्थापना की। इनका अध्यात्म मनुष्य के प्रेम पर टिका हुआ है। इनका सीधा कथन था जो मानव से प्रेम नहीं कर सकता वो ईश्वर से कैसे करेगा?

विद्वानों का मत है की हिंदी साहित्य में सूफी काव्य परम्परा का समय लगभग 14वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक है। इस परम्परा की शुरुआत मुल्ला-दाउद से मानी जाती है इनकी रचना का नाम चंदायन है जिसका रचनाकाल 1379 है। चंदायन की भाषा परिष्कृत अवधी है।

सूफियों ने भारतीय लोक कथाओं के माध्यम से सूफी दर्शन को समाज के सामने लाया। फारसी और अरबी लिपि का समन्वय अवधी भाषा के साथ किया। अन्य भारतीय भाषा के शब्दों को अपनाया व् अन्य भाषाओं में फारसी और अरबी के शब्दों को सुन्दरता से पिरोया। हिन्दू समाज की प्रथा, उत्सव, तीर्थ-व्रत, जादू-टोना की झलक सूफियों के काव्यों में दिखती है।

सूफी कवि ने खुदा के नूर हुस्न के बूत में दिखने की कोशिश की है। ऐसी घटना अवतारवाद के निकट पहुँच जाती है। इस प्रकार की साधना पर संशयवाद और नास्तिकता का आरोप भीं लगा दिया जाता रहा है एवं लोग इसे इस्लाम के खिलाफ मानते है।"विशेष रूप से तर्क दिया गया की अद्द्वैतवादी दर्शन जो ईश्वर और उसकी सृष्टि के मूल रूप से एक होने की बात करता है इसलिए यह धर्मविरोधी है क्योंकि इससे श्रष्टा और सृष्टि के मध्य भेद समाप्त हो जाता है।"2

परंतु सूफियों के अनुसार बन्दा अपनी साधना से खुदा से एक हो सकता है जिसका अर्थ बन्दे और खुदा की एकता ही है। तथा यह अद्वैतवाद से प्रभावित है और शंकराचार्य का अद्वैतवाद(अहम् ब्रह्मस्मि) का दर्शन भी यही कहता है कि ब्रह्म और जीव मूलतः एक है और जीव की मुक्ति उसके ब्रह्म में समा जाने में है अर्थात उससे एकाकार हो जाने में है। जब तक जीव में अज्ञान है वह ब्रह्म से दूर है।

सूफी में शैतान की धारणा भी देखी जाती है। शैतान साधक की साधना में बाधा पहुँचाता है यह हद तक कहीं न कहीं कबीर के अविद्या माया से प्रभावित है। कबीर अविद्या माया को सबसे बड़ी बाधा मानते हैं।

"माया महाठगिनी हम जानि
तिरगुन फ़ांस लिए कर डोले बोले मधुरी बानी"3

सूफी साधना का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है 'गुरु' क्योंकि ईश्वर प्राप्ति के लिए आवश्यक माध्यम की जरूरत होती है। यह गुरु सिर्फ मानव ही नहीं बल्कि प्रकृति, पशु, पक्षी कोई भी हो सकता है।

'गुरु सुआ जेहिं पंथ दिखावा,बिनु गुरु जगत को निर्गुन पावा।'

सूफी काव्य में विरह आत्मा व् परमात्मा के मध्य दूरी के सन्दर्भ में देखा गया है। यह अत्यधिक कष्टदायक और असह्य परिस्थितियों को जन्म देता है।

"पिउ सों कहेउ सन्देशड़ा,हे,भौंरा हे काग
सो धनि विरहे जरि मुई,तेहिक धुआं हमहिं लाग"

इस प्रकार सूफी प्रेमाख्यान में ब्रह्म की प्राप्ति के लिए प्रेम और साधना पर बल दिया गया है। इस साधना को पूरी करने के लिए साधक के बारे में कहा गया है कि

वह प्रकट में तो सब लोक व्यवहार करता रहे, सैकड़ो लोगो के बीच अपना काम करता रहे पर भीतर हृदय में भगवान की भावना करता रहे।
"परगट लोक चार कहु नाता,गुपुत भाउ मन जासौं राता"4
सूफी साधक की क्रमशः चार अवस्थाएं हैं जिसका निर्वाह पद्मावत में बखूबी हुआ है।

1} शरियत5 - साधक इस अवस्था में धर्मग्रंथों के विधि-निषेध का पालन करता है इस प्रकार यह साधना की प्रारंभिक अवस्था है पद्मावत में साधक साधना के लिए निकल पड़ता है।
'राजा चला साजि कै जोगू। साजही बेगि चलहु सब लोगू'

2} तरीकत6 - साधक गुरु के मार्गदर्शन में साधना के रहस्य मार्ग पर चलने लगता है। पद्मावत में हिरामन तोता से पद्मिनी का रूप वर्णन सुन्कर उसे प्राप्त करने के लिए रत्नसेन की सिंहल यात्रा उसकी साधना की स्थिति है।
"चला कटक जोगिन्ह कर कै गेरुआ सब भेसु
कोस बीस पारिहू दिसि जानौ फूला टेसु"

3} हकीकत7– सत्य बोध के पश्चात् साधक त्रिकालदर्शी हो जाता है। पद्मावत में पद्मावती से मिलने के बाद रत्न सेन को सातों स्वर्ग का सुख मिल जाता है(रत्नसेन-पद्मावती विवाह-खंड)।
"सातौ सरग हाथ जनु,औ सातौ कविलास"

4} मारिफ़त8– यह सिद्धावस्था है,काठी साधना द्वारा परमात्मा का सामीप्य मिल जाता है। साधक शक्तिसम्पन्न और पूर्ण ज्ञानी हो जाता है।
इस प्रकार सूफी प्रेमाख्यान में हम सूफी दर्शन का आधार, मानव-प्रेम, सांस्कृतिक समन्वय, लोक कथा का समन्वय, रहस्यवाद, विरह, प्रतीक और गुरु की महत्ता को देखते है। सूफी प्रतीक को प्रतीकार्थ का साधन बनाते है। यह प्रतीकार्थ परम सत्ता है इसलिए उनके यहाँ प्रेम है और उसमें भी विरह-स्थिति की प्रधानता है।
सूफी प्रेमाख्यान के प्रमुख कवि हैं मलिक मुहम्मद ,जायसी, मुल्ला- दाउद (चंदायन), कुतुबन (मिरगावती), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली), नूर मुहम्मद (इन्द्रावती, अनुराग बांसूरी) आदि।
हिंदी में सूफी काव्य परम्परा के श्रेष्ठ कवि मालिक मुहम्मद जायसी है। जायसी हिंदी के पहले विधिवत कवि भी है। कबीरदास श्रेष्ठ है लेकिन विधिवत कवि है ऐसा उनका दावा नहीं है। कबीरदास के पथ प्रदर्शन और क्षमता के बिना शायद जायसी लिए पद्मावत को लिख पाना भी संभव न होता9।
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – "जायसी अपने समय के सिद्ध फकीरों मे गिने जाते थे" इसके विपरीत विजयदेव नारायण साही लिखते है – "जायसी केवल कवि नहीं, वे आत्म-सजग कवि हैं। अपने कवि होने का, गुणी होने का उन्हें पूरा भरोसा व् गर्व है। "10

"मुहमद कबि जो प्रेम का,न तन रकत न मांसू
जेईं मुख देखा तेईं हँसा सुना तो आंसु"

खैर ये विद्द्वानों की ढंग- ढंग की विचारधारा का विषय है। सभी अपने मतों के समर्थक है। एवं अपने तरीकों से समझाने की कोशिश करते है। जायसी अमेठी के निकट जायस के रहनेवाले थे तथा ऐसा कहा जाता है कि ये शेरशाह के समकालीन थे।
इनकी तीन रचनाएँ अखरावट, आखिरी कलाम और पद्मावत है जो प्रमाणिक रचनाएँ है। बाकी उपलब्ध ग्रंथों के बारे में संदेह व्यक्त किया जाता है। कवि के यश का आधार है पद्मावत। पद्मावत प्रेम की पीर की व्यंजना करने वाला लिखा गया है। पद्मावत की काव्य-भूमिका विशद् एवं उदात्त है।

पद्मावत की कथा चित्तौड़ शासक रतनसेन और सिंहल देश की राजकन्या पद्मिनी की प्रेम कहानी पर आधारित है। इसमें कवि ने कौशलपूर्वक कल्पना एवं एतिहासिकता का मिश्रण कर दिया है। पद्मावत मानुष प्रेम अथार्त मानवीय प्रेम की महिमा व्यंजित करता है। पद्मावत में प्रेम की मूल्य, अर्जित प्रेम का महत्व, प्रेमी के श्रद्धाभाव , बलिदान की भावना, प्रेम के एकान्तिक मार्ग को दिखाया गया है। जायसी का पद्मावत प्रेम-तत्व की स्थापना करने वाला काव्य है। प्रेम और साधना द्वारा दिखाया गया है कि प्रेमी-प्रेमिका का मिलन कैसे होता है तथा जिसमे प्रेम व् साधना के प्रति संवेदना नहीं है उसे बस मुट्ठी भर राख नसीब है। पद्मावत में 'रोमानी प्रेम' की तलाश है अर्थात प्रेम का ऐसा अनुभव जो बाद में विवाह में बदल जाय। जायसी की सर्वश्रेष्ठ कल्पना देखिये। । । रत्नसेन को प्रेम पद्मिनी का रूप देख नहीं हुआ था सिर्फ सुआ के मुख से बड़ाई सुनकर हुआ था,प्रेम में चकाचौंध रत्नसेन कई बार बेहोश होता है, उसके प्रेम गिरता-पड़ता रहता है ,कभी बड़ाई सुनकर, कभी मंदिर जाते पद्मिनी की एक मात्र झलक से। जायसी ने स्पष्ट कर दिया है कि प्रेम करना तो आसान है लेकिन इस प्रेम के लिए 'प्रेमी' को तलाशना और उसका प्रेम हासिल करना बहुत ही कठिन काम है। और प्रेम सिर्फ वासना की पूर्ति के लिए हो तो उसे राख के सिवा और क्या हासिल होगा---

"मानुष प्रेम भयउ बैकुंठी, नाहिं त का छार एक मूठी"
और कबीर भी प्रेम को लेकर कुछ इसी तह की बात करते हैं उनका भी स्पष्ट कहना की प्रेम तत्त्व आसानी से नहीं पाया जा सकता है रे बन्दे।
"कबीर यहु घर प्रेम का है,खाला का घर नाँहि
सीस उतारे हाथि करि, सो पैसे घर माँहि। "11

सिगमंड फ्रायड जैसे मनोविज्ञानी प्रेम को सबसे पहले यौनतृप्ति से जोड़ देते हैं। उनके नजर में बंधुत्व प्रेम भी यौनतृप्ति का ही परिणाम है। लेकिन वे भूल जाते हैं कि कुछ प्रेम ऐसे भी होते हैं जिनका यौनतृप्ति से बिलकुल भी सम्बन्ध नहीं होता है। देह से परे भी प्रेम होता है जिसे अध्यात्मिक प्रेम कहा जाता है।
कार्ल मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के माध्यम से बताया है " मनुष्य को समझने के लिए सिर्फ उसके शरीर को,या भूख और आधिकार बोध जैसी उसकी संवेगात्मक इच्छाओं को समझना भर ही काफी नहीं है,बल्कि मनुष्य के जीवन की पूरी प्रक्रिया को उसके जीवन के अभ्यास को समझना जरुरी है। 12
पद्मावत के रत्नसेन को न शरीर की भूख है न अधिकार बोध,वह बस प्रेम पाना चाहता है और वह अपने स्नेह और मोहकता से काम लेता है। ईश्वर को पाने के लिए भी तो स्नेह चाहिए ही। जायसी ने फ्रायड के प्रेम सम्बन्धी तत्त्व को कई सौ वरसों पहले नकार चुके थे। फ्रायड चूँकि पूँजीवाद के उपज थे इसलिए उनका मत आया और चला भी गया। लेकिन जायसी के प्रेम निरूपण में आज भी वही ताजगी बरक़रार है। क्यूँकि जायसी ने प्रेम पाने को ज्यादा महत्व देते हैं प्रेम करने को नहीं। ध्यान दीजियेगा ' में प्रेम पाना' और 'प्रेम करना' में बहुत अंतर है और पद्मावत में प्रेम पाने पर जोर है प्रेम करने पर नहीं। बात नागमती की जिसे रत्नसेन ने छोड़ कर चल पड़ा,कारन उसमे अहम् की भावना आ गई थी या फिर रत्नसेन के फंतासी भरी अपेक्षाओं पर वो खरी नहीं उतरी। क्या रत्नसेन को नागमती में खुदा का नूर नहीं दिख सका? यक्ष प्रश्न है।
जायसी का रहस्यवाद – हिंदी के सभी कवियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार हिंदी के कवियों में यदि कहीं रमणीय सुंदर अद्वैती रहस्यवादी है तो वह जायसी का है, जिनकी भावुकता बहुत ही ऊँची कोटि की है। वे कहते हैं "जायसी का हृदय कैसा कोमल और प्रेम की पीड़ से भरा हुआ था,क्या लोकपक्ष में, क्या अध्यात्मपक्ष में दोनों ओर उसकी गूढ़ता,गंभीरता और सरसता विलक्षण दिखाई देती है"13
जायसी एकता के समर्थक थे जहाँ कबीर हिन्दू-मुस्लिम को समझाने के लिए डांट-फटकार का सहारा लेते है फिर भी कामयाब नही हो पाते है। वहीं जायसी दोनों समुदायों को प्रेम-पूर्वक समझाते है। फिर भी जायसी के नजरों में कबीर बड़े

साधक हैं एवं कबीर से हारने की बात स्वीकार कर अपने बड़प्पन का परिचय देते है।

'ना नारद तब रोई पुकारा। एक जोलाहे सों मैं हारा'14

**सन्दर्भ सूची**


1. डॉ. ओमप्रकश सिंह,प्रमुख हिंदी कवि और काव्य,ग्रंथालोक प्रकाशन,पृष्ठ- 207
2. सतीश चन्द्र,मध्यकालीन भारत,ओरिएंट ब्लैक स्वान प्रकाशन,पृष्ठ- 182
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी,कबीर,राजकमल प्रकाशन,पृष्ठ- 237
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल,जायसी ग्रंथावली,वाणी प्रकाशन,पृष्ठ-132
5. वही,पृष्ठ- 132
6. वही,पृष्ठ- 132
7. वही,पृष्ठ- 132
8. वही,पृष्ठ- 132
9. विजयदेव नारायण साही,हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद तृतीय संस्करण,2004,पृष्ठ- 1
10. वही,पृष्ठ- 31
11. हजारी प्रसाद द्विवेदी,कबीर,राजकमल प्रकाशन, उन्नीसवीं आकृति : 2014 पृष्ठ- 129
12. उपरोक्त उद्धरण सीधे कार्ल मार्क्स की ऐतिहासिक भौतिकवाद से न लेकर,एरिक फ्रॉम की 'आर्ट ऑफ़ लविंग' से ली गई है,पृष्ठ- 80
13. आचार्य रामचंद्र शुक्ल,हिंदी साहित्य का इतिहास,रॉयल बुक डिपो,पृष्ठ- 79
14. जायसी ग्रंथावली,पृष्ठ-25